प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. महादेवी वर्मा को अपना निश्चय क्यों बदलना पड़ा?
2. सोना के दिनभर के कार्यकलाप को अपनी भाषा में लिखिए?
3. सोना को छोटे बच्चे क्यों अच्छे लगते थे?
4. **भाव स्पष्ट कीजिए**

   (क) जब मृत्यु इतनी अपवित्र और असुंदर है, तब उसे बाँटते घूमना क्यों अपवित्र और असुंदर कार्य नहीं है।

   (ख) पशु, मनुष्य के निश्छल स्नेह से परिचित रहते हैं, उसकी ऊँची-नीची सामाजिक स्थितियों से नहीं।

पाठ से आगे

1. सोना के सौंदर्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
2. पशु-पक्षियों की सुरक्षा के लिए आप क्या-क्या उपाय करेंगे?
3. **क्या होता यदि -**

   (क) हिरन के तीन-चार दिन के बच्चे को लेखिका के पास न लाया जाता।

   (ख) हेमंत-वसंत और फ्लोरा सोना से दोस्ती न करते।

   (ग) लेखिका बद्रीनाथ की यात्रा पर न जाती।

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

व्याकरण

1. **व्यंजनों के प्रत्येक वर्ग के नासिक्य व्यंजन को अनुस्वार (ं) प्रकट करता है जबकि अनुनासिक (ँ) स्वर का गुण है। पाठ में आए पाँच अनुनासिक और पाँच अनुस्वार शब्दों की सूची बनाइए।**

अनुनासिक	**अनुस्वार**
(क)	(क)
(ख)	(ख)
(ग)	(ग)
(घ)	(घ)

2. इन वाक्यों में रेखांकित शब्दों के कारक चिह्न की पहचान कीजिए?

(क) मैंने निश्चय किया कि अब हिरन नहीं पालूँगी।

(ख) जिसमें उसके लिए स्नेह छलता था।

(ग) गोधूली कूदकर मेरे कंधे पर आ बैठी।

(घ) हिरन शेर से डरता है।

(ङ) अरे! यह तो बहुत सुंदर है।

(च) मेरी दृष्टि सोना को खोजने लगी।

3. कई बार दो शब्द मिलकर भी एक शब्द बनाते हैं, जैसे :-

छात्र + आवास = छात्रावास

इस प्रकार कुछ शब्द बनाइए ।

गतिविधि

1. महादेवी वर्मा द्वारा रचित पुस्तक 'मेरा परिवार' से उनके पालतू पशु-पक्षी के शब्द चित्रों की ज्ञानकारी प्राप्त कीजिए।

2. अधिक-से-अधिक लोग पशु-पक्षियों से प्रेम करें, इस पर कोई छोटी सी कविता या निबंध लिखिए।

18 हुएनत्सांग की भारत यात्रा

चीन में सन् 630 के पतझड़ का मौसम था, हुएनत्सांग खुशी से सराबोर होकर सुमेरु पर्वत को देख रहे थे। उन्हें लगा कि दैवी पर्वत सुमेरु महान समुद्र के मध्य में से उभरा। सुमेरु पर्वत सोना, चांदी, रत्नों और जवाहरातों का बना हुआ सुंदर एवं विशाल पर्वत लग रहा था। उन्होंने उस पर चढ़ना चाहा, लेकिन उनके चारों ओर सागर की ऊँची भयंकर लहरों ने उनकी कोशिश नाकामयाब कर दी। उस समय वहाँ कोई जहाज एवं नौका भी नहीं दिखाई दे रही थी। हुएनत्सांग बिना किसी डर के लहरों को पार करते रहे। ठीक उसी समय उनके पैरों के समीप पाषाण-कमल उदित हुआ। जैसे ही वे कमल पर पैर रखते, कमल गायब होकर और दुबारा उनके सामने प्रकट होता। इस तरह वे पाषाण कमल पर पैर रखते हुए उस पवित्र पर्वत तक पहुंच गए। लेकिन वे उसकी चोटी पर न चढ़ सके। जैसे ही उन्होंने साहस बटोरकर कदम आगे बढ़ाने की कोशिश की, वैसे ही एक तेज बवंडर ने आकर उन्हें उठाकर पर्वत की सबसे ऊँची चोटी पर पहुँचा दिया।

आनंद से विभोर होकर हुएनत्सांग की नींद खुली। उन्होंने स्वप्न को एक शुभ शगुन मानकर बुद्ध की जन्मभूमि, भारत की तीर्थ यात्रा प्रारंभ की। वे उसी समय राजधानी छांग-एन से चल पड़े। वे उस समय तक चलते गए जब तक कि लिएंग चाउ ने उन्हें न रोका। उसने हुएनत्सांग से यह प्रार्थना की कि वह कुछ बौद्ध लेखों की व्याख्या कर दें। कारण यह था कि हुएनत्सांग अपनी विद्वता के लिए विख्यात थे।

उस जमाने में चीन के कानून के मुताबिक लोगों को देश छोड़ने की आज्ञा नहीं थी। लेकिन हुएनत्सांग किसी के द्वारा रोके जाने पर न रुकने के लिए दृढ़ संकल्पित थे। वे इस नेक काम में मदद मांगने लिएंग-चाउ के सबसे अधिक श्रद्धास्पद भिक्षु के पास गए। भिक्षु ने उत्साह के साथ उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और हुएनत्सांग के मार्गदर्शन के लिए अपने दो शिष्यों को भेज दिया।

हुएनत्सांग और उसके दोनों साथी दिन में छिपे रहते और रात में यात्रा करते हुए क्वा-चौ पहुँचे। वे यात्रियों और व्यापारियों से भारत जाने के लिए पश्चिमी मार्गों के बारे में पूछा करते थे।

यात्रियों ने कहा "यहां से पचास ली (एक मील में तीन ली होते हैं) की दूरी पर उत्तर दिशा में हु-लु नदी है। उसके पानी में भंवरें पड़ती हैं और बहाव भी इतना तेज है कि उसे नाव के द्वारा पार नहीं किया जा सकता।"

"तब उसे यात्री किस तरह पार करते हैं?" हुएनत्सांग ने कहा, "जरूर कोई रास्ता होगा"।

"जहाँ वह बहुत उथली हो, वहाँ से पार किया जा सकता है," उत्तर था। "लेकिन यात्रियों के रास्ते में सिर्फ नदी ही रुकावट नहीं है।" बताने वाला यह कहकर जरा रुका, तभी हुएनत्सांग ने यह जानने की उत्सुकता जाहिर की कि आखिर वे कौन से खतरे हैं जो रास्ते में झेलने जरूरी हैं।

"वहाँ यह-मैन-अवरोध है" आदमी ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "और उसके बाद पांच सिग्नल टावर भी हैं। जो आदमी इन टावरों का प्रहरी है, वह कड़ी निगरानी करता है कि कोई भी आदमी बिना अनुमति के चीन से बाहर न जा सके। ये टावर एक सौ ली की दूरी पर हैं और इनके और धरती के बीच में कहीं भी न तो पानी मिलता है और न अनाज उगता है। इसके उस पार मौ-हौ-यैन नामक रेगिस्तान और हामी की सीमाएँ हैं।"

हुएनत्सांग का हौसला कुछ कम हो गया और वह लगातार एक महीने तक रास्तों और जीवन-यापन के तरीकों के बारे में विचार करता रहा। उनकी परेशानी उस समय और बढ़ गई जब लिएंग चाउ के जासूसों ने गवर्नर से हुएनत्सांग की योजना के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि भिक्षु को चीन के बाहर जाने से रोका जाए।

बुद्ध के देश जाने वाले रास्ते के बारे में जानकारों ने उन्हें चेतावनी दी "पश्चिमी रास्ते मुश्किल और खतरनाक हैं। कभी रेत के तूफान रास्ता रोक देते हैं और दूसरी ओर नर-पिशाचों तथा लू-लपट से भरे आंधी तूफानों का भी खतरा है। इनसे कोई भी नहीं बच सकता। आपके लिए वहाँ अकेले जाना तो बहुत ही बुरा होगा। मेरी प्रार्थना है कि आप इस पर गंभीरता के साथ विचार करें। अपनी जिन्दगी से खिलवाड़ न करें।"

लेकिन हुएनत्सांग पीछे हटने वाले नहीं थे। उन्होंने शपथ ली, "जब तक मैं बुद्ध के देश नहीं पहुँच जाता, मैं कभी चीन की तरफ मुड़कर भी नहीं देखूंगा। ऐसा करने में यदि रास्ते में मेरी मृत्यु हो जाये तो उसकी भी चिंता नहीं"।

इस प्रकार हुएनत्सांग बुद्ध के देश पहुँचे। हुएनत्सांग आठ या नौ दिन तक बोध गया में ठहरे। गया में कुछ लोग बसे हुए थे। वहाँ लगभग एक हजार ब्राह्मण परिवार रहते थे जिन्हें ऋषियों की सन्तान माना जाता था। ये राजा की प्रजा में शामिल नहीं थे। लोग इनको पूजनीय मानते थे।

जब हुएनत्सांग गया में थे तो नालंदा के प्रसिद्ध मठ के भिक्षुओं ने उनकी तीर्थ यात्रा के बारे में सुना। नालंदा मठ से चार भिक्षु हुएनत्सांग को लेने वहाँ आए। हुएनत्सांग इससे बड़े प्रसन्न हुए। कारण यह था कि वह नालंदा के प्रसिद्ध विद्वान शीलभद्र से योगशास्त्र पर चर्चा करना चाहते थे।

नालंदा के मठ के चारों ओर ईंटों की दीवार थी। एक द्वार महाविद्यालय के रास्ते में खुलता था। वहाँ आठ बड़े कक्ष थे। हुएनत्सांग ने लिखा है कि भवन कलात्मक और बुर्जों से सज्जित था।

वेधशालाएं सुबह के कुहासे में छिप जाती थीं और ऊपरी कमरे बादलों में खोए से प्रतीत होते थे। हुएनत्सांग मठ की सुंदरता से बहुत प्रभावित हुए और इन शब्दों में उद्गार व्यक्त किए, खिड़कियों से झांकने पर दिखाई देता है कि हवा के साथ मिलकर बादल किस प्रकार अठखेलियाँ करते और नयी-नयी आकृतियाँ बनाते थे। वृक्ष के पत्तों पर सूरज और चाँद की रश्मियाँ झिलमिलाती थीं।

तालाबों के नीचे स्वच्छ पानी पर नील कमल खिलते थे तथा साथ में ही रक्ताभ कनक पुष्प झूमते रहते। पड़ोस के आम्र कुंजों के आम के बौर की भीनी- भीनी खुशबू वायु में तैरती रहती।

"बाहरी सभी आंगनों में चार मंजिले कक्ष पुजारियों के लिए थे। ये अजगर की छवि के बने थे। लाल-मूगिया खम्भों पर बेल-बूटे उकरे थे। जगह-जगह रोशनदान बने थे। फर्श इतनी चमकदार ईंटों की बनी हुई थी कि उसमें से हजारों तरह की छटाएं प्रकाशित हो रही थीं। इन सभी से वह स्थान अत्यन्त रमणीय हो रहा था।"

"वहाँ का राजा पुजारियों का सम्मान करता था तथा लगभग सौ गांवों के लगान को इस संस्थान को धर्मार्थ दिया करता था।"

"नालन्दा में हुएनत्सांग को वृद्ध शीलभद्र से मिलने देने से पूर्व लगभग 20 भिक्षुओं ने विभिन्न प्रकार की जानकारी दी। हुएनत्सांग ने सभी आदेशों और अनुदेशों को भली प्रकार समझा तथा जब उसे शीलभद्र के सामने ले जाया गया तो उसने घुटनों के बल बैठकर श्रद्धापूर्वक वृद्ध भिक्षु के चरणों का चुम्बन किया और भूमि पर सिर रख दिया। तब वह शीलभद्र के सामने खड़ा हुआ और नम्रतापूर्वक बोला, मैंने आपके निर्देश में शिक्षा ग्रहण करने के लिए चीन से यहाँ तक की यात्रा की है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे अपना शिष्य बनाएं।"

इन शब्दों को सुनते ही शीलभद्र की आँखें भर आईं। उन्होंने कहा "हमारा गुरु शिष्य का संबंध देव निर्धारित है। मैं काफी समय से बीमार था, मेरी बीमारी इतनी दुखदायी थी कि मैंने जीवन लीला समाप्त करने की इच्छा प्रकट की। तब एक रात जब मैं सोया हुआ था मैंने स्वप्न में देखा कि तीन देव आये हैं। उनमें से एक का रंग स्वर्ण, दूसरे का स्वच्छ तथा तीसरे का रजत जैसा था। उन्होंने मुझ से कहा कि मैं मरने की इच्छा वापस ले लूं और जीने की इच्छा प्रकट करूं क्योंकि चीन देश से एक-भिक्षु यहाँ धर्म ज्ञान प्राप्त करने

के लिए आ रहा है और वह तुम्हारा शिष्य बन कर शिक्षा ग्रहण करना चाहता है। इसलिए तुम उसे भली प्रकार शिक्षित करना।"

दोनों भिक्षुओं ने समय व्यर्थ न गंवाते हुए तुरंत अध्ययन प्रारंभ कर दिया। हुएनत्सांग ने कई वर्ष नालन्दा में बिताए। इन दौरान उन्होंने शेष भारत की यात्रा भी की।

हुएनत्सांग कुशाग्र बुद्धि के थे जिन्होंने नालन्दा में अध्ययन का पूरा लाभ उठाया। यहाँ उन्होंने भाषा का पूर्ण अध्ययन किया और विद्वतजनों के साथ वार्तालाप कर पूरी जानकारियाँ लीं। उन्होंने बौद्ध और ब्राह्मण ग्रन्थों का सूक्ष्म अध्ययन किया। बाद में उन्होंने बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों और दर्शन में नालन्दा के योगदान पर लिखा "यहाँ के भिक्षु बहुत विद्वान और दक्ष थे। मठ के नियम कठोर थे और सब भिक्षु इनका पालन करने के लिए बाध्य थे। सुबह से शाम तक अध्ययन-अध्यापन करते तथा युवा और वृद्ध एक दूसरे की सहायता करते। जो दर्शनार्थी यहाँ शास्त्रार्थ में भाग लेना चाहता था, द्वारपाल उससे द्वार पर ही कई प्रकार के प्रश्न पूछते। जो लोग प्रश्नों का उत्तर नहीं दे पाते वे वापस चले जाते। प्रवेश से पहले यह आवश्यक था कि हरेक ने नयी और पुरानी पुस्तकों का अध्ययन किया हो।"

– बेलिन्दर एवं हरिन्दर धनौआ

नोट : हमारी पाठ्यपुस्तकों में 'ह्वेनसांग' की जगह 'हुएनत्सांग' प्रचलन में रहा है।

शब्दार्थ

पाषाण- पत्थर	**मार्गदर्शन**-राह दिखाना	**उदित**-उगा हुआ
विख्यात- प्रसिद्ध	**बवंडर**-आँधी-तूफान, चक्रवात	**श्रद्धास्पद**-आदरणीय, श्रद्धेय
प्रकट-सामने, अवतरित	**निर्देश**-समझाना, बतलाना	**संकल्पित**-दृढ़ निश्चय किया हुआ
उथली-कम गहरी, छिछली	**वेधशाला**-जहाँ ग्रह-नक्षत्रों का अध्ययन किया जाता है।	

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. हुएनत्सांग भारत क्यों आना चाहते थे?
2. भारत आने में हुएनत्सांग को किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा?
3. हुएनत्सांग और शीलभद्र के मिलन का वर्णन कीजिए।
4. नालंदा का वर्णन हुएनत्सांग ने किन शब्दों में किया?

पाठ से आगे

1. निम्नलिखित अंश 'हुएनत्सांग' के किस पक्ष को दर्शाता है।
   "जब तक मैं बुद्ध के देश में नहीं पहुँच जाता, मैं कभी चीन की तरफ मुड़कर भी नहीं देखूँगा। ऐसा करने में यदि रास्ते में मेरी मृत्यु हो जाए तो उसकी भी चिन्ता नहीं।"
2. आप अपने आस-पास के किसी धार्मिक, ऐतिहासिक स्थल पर जाइए और उसकी विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

व्याकरण

1. **कारक और उनके साथ लगने वाले चिह्न इस प्रकार है-**

कारक	विभक्ति
कर्त्ता	ने
कर्म	को
करण	से, द्वारा
सम्प्रदान	के लिए
आपादान	से
सम्बन्ध	का, के, की
अधिकरण	में, पर
सम्बोधन	हे, हो, अरे

उपर्युक्त विभक्तियों का प्रयोग करते हुए एक-एक वाक्य बनाइए।

गतिविधि

1. गया और नालंदा की तरह बिहार की कुछ प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थलों की सूची बनाइए।
2. अपने शिक्षकों/अभिभावकों से पता कीजिए कि बिहार में मेले कहाँ-कहाँ लगते हैं और वे क्यों प्रसिद्ध हैं?

19 आर्यभट

आकाश में चमकते सितारे सदा से मनुष्य के लिए आकर्षण के केन्द्र रहे हैं। मानव युगों से यह कल्पना करता रहा है कि वह इन नक्षत्रों के रूप-रंग, आकार और रचना को जान सके। उनकी यात्रा कर, उनके बारे में अनुभव प्राप्त कर सके। यह विचार भी उसे गुदगुदाता रहा है कि किसी-न-किसी नक्षत्र पर उसके जैसे लोग भी बसते होंगे। मानव की इसी जिज्ञासा ने उसे आकाश में विद्यमान नक्षत्रों की खोजबीन करने के लिए प्रेरित किया।

युगों से चले आ रहे परीक्षणों के कारण ही आज मानव धरती पर बैठे-बैठे ही कुछ नक्षत्रों में घटने वाली घटनाओं को जानने में सक्षम हो गया है।

भारत में हजारों वर्ष पूर्व भी ग्रह-नक्षत्रों के विषय में विस्तार से चिन्तन-मनन किया गया। आर्यभट भारत के पहले व्यक्ति थे जिन्होंने कहा कि पृथ्वी अपने धुरी पर चक्कर लगाती है। उनके अनुसार तारामंडल स्थिर रहता है और पृथ्वी अपनी धुरी पर पश्चिम से पूर्व की ओर घूमती है। हम भी पृथ्वी के साथ घूमते रहते हैं। आज यह एक वैज्ञानिक तथ्य है पर उस समय लौकिक मत में ऐसी बात करना पाप समझा जाता था क्योंकि धर्म ग्रन्थ भी यही कहते थे कि पृथ्वी स्थिर है।

आर्यभट का जन्म अश्मक प्रदेश में 476ई. में हुआ था। गोदावरी एवं नर्मदा के बीच के क्षेत्र को अश्मक प्रदेश के नाम से जाना जाता था। वे अपने नये विचारों का प्रचार करके लोगों में व्याप्त अन्धविश्वास को दूर करने एवं उत्तर भारत के ज्योतिषियों के विचारों का अध्ययन करने पाटलिपुत्र आये थे। पाटलिपुत्र नगर से थोड़ी दूर एक आश्रम में उनकी वेधशाला थी। जहाँ ताँबे, पीतल और लकड़ी के तरह-तरह के यंत्र रखे थे।

आर्यभट को ज्योतिष सम्राट कहा जाता है पर गणित में भी उन्हें विशेष कुशलता प्राप्त थी। इन विषयों में उन्होंने अनेक पुरानी मान्यताओं का खण्डन कर नवीन मतों की स्थापना की। वे स्वतंत्र विचारों के व्यक्ति थे और किसी भी दबाव में आकर गलत बातों को स्वीकार करना उनके स्वभाव के विरुद्ध था।

आर्यभट ने अपने अनुभवों और विचारों को "आर्यभटीयम्" नामक ग्रन्थ में संकलित किया। इस ग्रन्थ को 'आर्यभटीय' भी कहते हैं। उनकी पुस्तक के एक श्लोक के आधार पर कहा जा सकता है कि आर्यभट उस समय केवल तेईस (23) वर्ष के थे जब यह पुस्तक लिखी गई। है न यह आश्चर्य की बात! क्योंकि इतनी छोटी आयु में धर्म ग्रन्थों और परम्परागत धारणाओं का खण्डन कर, नवीन विचारों और

धारणाओं की स्थापना करना कोई आसान काम न था।

आर्यभटीयम् में गणित और ज्योतिष दोनों ही हैं। यह महान ग्रन्थ केवल दो सौ बयालीस (242) पंक्तियों एवं इक्कीस श्लोकों में सिमटा हुआ है। पर यह है गणित और ज्योतिष का अपूर्व भण्डार।

आर्यभट महान ज्योतिष शास्त्री थे। उन्होंने अपने काल में फैले अनेक अन्धविश्वासों का खण्डन किया। उन्होंने ही सबसे पहले कहा कि पृथ्वी गोल है और अपने धुरी पर चक्कर लगाती है। आर्यभट ने चन्द्रग्रहण तथा सूर्यग्रहण के कारणों पर भी स्पष्ट रूप से प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि चन्द्रमा और पृथ्वी की परछाईं पड़ने से ग्रहण होते हैं। पृथ्वी की छाया जब चन्द्रमा पर पड़ती है तो चन्द्रग्रहण होता है। और चन्द्रमा की छाया जब पृथ्वी पर पड़ती है तब सूर्यग्रहण होता है। आर्यभट ने आज से हजारों वर्ष पहले यह बता दिया था कि चन्द्रमा स्वयं नहीं चमकता अपितु वह सूर्य के प्रकाश से चमकता है। आर्यभट के अध्ययन से उस समय लोगों ने जान लिया था कि चाँद के प्रकट होने तथा पूरा गायब होने के मध्य एक निश्चित समय होता है। सूरज, चाँद तथा नक्षत्र जिन मार्गो से यात्रा करते हैं उसे 'रविमार्ग' कहा गया और इसी के आधार पर ज्योतिषियों ने बारह (12) राशियों का विभाजन किया। आज भी यह मान्यता है कि आकाश के ग्रह-नक्षत्र मनुष्य के जीवन पर प्रभाव डालते हैं, परन्तु आर्यभटीयम् में किसी भी प्रकार का अन्धविश्वास नहीं झलकता। यह ग्रन्थ पूर्णतया विज्ञान पर आधारित है।

आर्यभट की सबसे बड़ी उपलब्धि शून्य की उपयोगिता को प्रमाणित करना था। जिसके आधार पर बड़ी-से-बड़ी संख्या को सरलता से लिखा जा सकता है। कम्प्यूटर की माप में शून्य का महत्व सर्वविदित है। अन्तरिक्ष की सभी गणनाएँ इसके बिना असम्भव है। कुछ विद्वानों के कथनानुसार शून्य का ज्ञान भी सर्वप्रथम आर्यभट ने ही दिया।

आर्यभट ने अंकगणित, बीजगणित और रेखागणित के अनेक सिद्धान्त अपनी पुस्तक में दिए। उस समय वृत के व्यास और परिधि की जानकारी कम ही गणितज्ञों को थी। आर्यभट ने आज से लगभग डेढ़ हजार (1,500) वर्ष पहले अनुसंधान किया और बताया कि यदि वृत्त का व्यास ज्ञात है तो वृत्त की परिधि मालूम की जा सकती है। आर्यभट ने गणित की असंख्य बारीकियों को बड़ी-कुशलता से समझाया तथा नये-नये सिद्धान्त स्थापित किए।

आर्यभट ने ज्यामिति के क्षेत्र में भी अपनी प्रतिभा का अनुपम प्रदर्शन किया । उन्होंने त्रिकोण की तीन भुजाओं, उसके कोणों का अध्ययन कर, कोण की समिति की नई पद्धति की खोज की। बाद में यूनानी- गणितज्ञों ने भी इसकी चर्चा की और धीरे-धीरे यह ज्ञान यूरोप में फैला। आज विद्यालयों में पढ़ाए जाने वाले रेखागणित को यूनानी गणितज्ञ यूक्लिड की ज्यामिति पर आधारित भले ही मानते हों पर इसकी विस्तृत जड़ें 'आर्यभटीयम्' में देखी जा सकती हैं।

आर्यभट ने नया रास्ता दिखाया। उन्होंने दिखा दिया कि विज्ञान की खोज का रास्ता धार्मिक विश्वासों के रास्ते से जुदा है। वे हमारे देश के महान वैज्ञानिक ही नहीं, एक क्रान्तिकारी विचारक भी थे। श्रुति, स्मृति और पुराणों की परम्परा के विरोध में सही विचार प्रस्तुत करके उन्होंने बड़े साहस का परिचय दिया था और भारत में वैज्ञानिक अनुसंधान की एक स्वस्थ परम्परा स्थापित की। इसीलिए आज हमने उन्हें आसमान में उठाया है। भारत ने अपने पहले कृत्रिम उपग्रह को किसी काल्पनिक देवता का नहीं बल्कि, अपने महान वैज्ञानिक का नाम दिया–आर्यभट।

–पाठ्यपुस्तक विकास समिति

शब्दार्थ

अनुपम– सुन्दर, बेहतरीन

नक्षत्र–तारा

उपग्रह–बड़े ग्रहों की परिक्रमा करने वाले आकाशीय पिंड

अपूर्व– जिसके जैसा पहले न हुआ हो

अंतरिक्ष– आकाश

मिति–माप।

जिज्ञासा–जानने की इच्छा सतत– लगातार

व्यास–वृत्त से होकर परिधि के दो छोरों के बीच की दूरी

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

प्रश्न–अभ्यास

पाठ से

1. निम्नलिखित वाक्यों में सही (⌧) के सामने सही तथा गलत के सामने गलत (×) का निशान लगाइए।

(i) आर्यभट एक प्रसिद्ध किसान थे। ( )

(ii) वे पाटलिपुत्र के रहने वाले थे। ( )

(iii) आर्यभट भारत के पहले व्यक्ति थे जिन्होंने कहा था कि पृथ्वी अपनी धुरी पर चक्कर लगाती है। ( )

(iv) चाँद के प्रकट होने तथा पूरा गायब होने के मध्य एक निश्चित अवधि होती है। ( )

Developed by: ABSOL www.absol.in